9. अफ्रीका

भारत के पश्चिम में एक विशाल महाद्वीप है। इस महाद्वीप में हज़ारों मील लम्बे-चौड़े रेगिस्तान हैं, घने जंगल हैं, नदियां बहती हैं, बड़ी-बड़ी झीलें हैं, सैकड़ों मील तक घास ही घास के प्रदेश हैं। ऐसे-ऐसे जंगली जानवर हैं जिन्हें हम अपने देश में देख नहीं पाते। यहां संसार की सोने और हीरे की सबसे बड़ी खदानें हैं। तांबा, हीरा, सोना और न जाने कितनी अन्य धातुएं अफ्रीका की खदानों से निकाली जाती हैं। तुम्हें शायद जानकर आश्चर्य होगा कि अफ्रीका ही मानव का जन्म स्थान है। अफ्रीका में ही सबसे पहले मानव का विकास हुआ। यहीं से मानव जाकर दूसरे महाद्वीपों में बसा।

संसार के मानचित्र में अफ्रीका महाद्वीप को देखो। वह किन सागरों से घिरा है? इसके नज़दीक में और कौन से महाद्वीप हैं?

चित्र -1

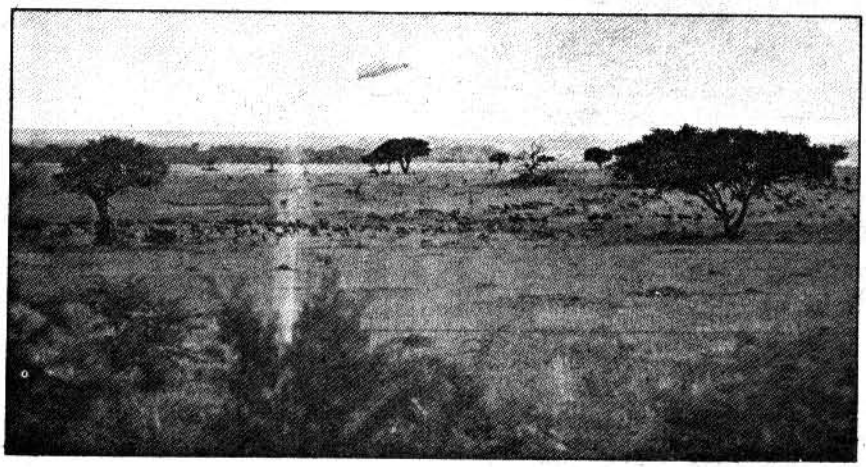

चित्र - 2

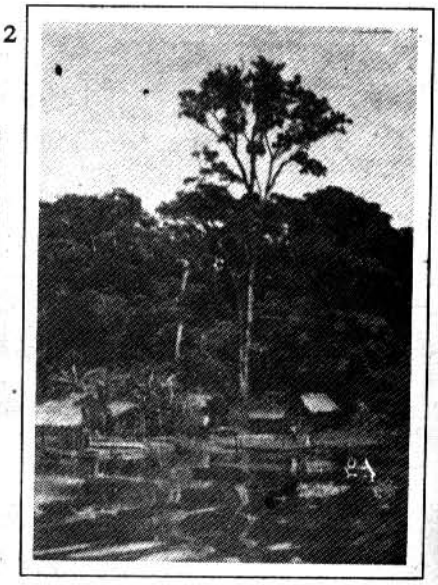

चित्र - 3

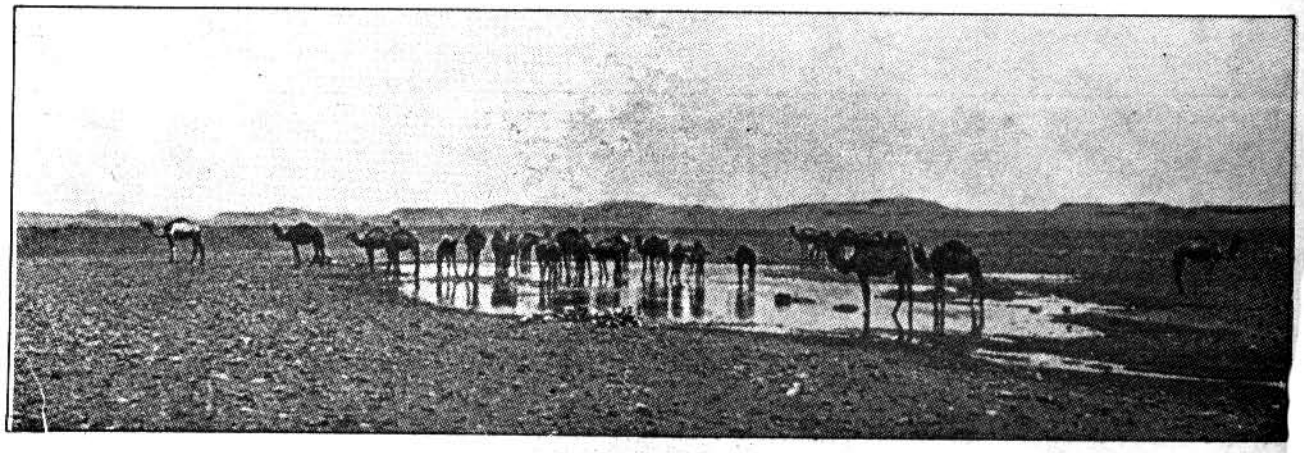

अफ्रीका - एक विशाल पठार

अफ्रीका की बनावट तथा ऊंचाई के मानचित्र को देखो। क्या तुम्हें कोई विशाल मैदान दिख रहा है? केवल समुद्र के किनारे पर संकरा मैदान है। बाकी पूरा महाद्वीप एक विशाल पठार ही है। मानचित्र को ध्यान से देखो तो पाओगे कि एक पठार होते हुए भी सब जगह समान ऊंचाई नहीं है।

किनारे के संकरे मैदान कितनी ऊंचाई के हैं?
पठार का अधिकतर हिस्सा कितनी ऊंचाई का है?
पठार पर चाड झील और कांगो तथा नील नदियों के निचले हिस्से यानी बेसिन हैं- इन्हें नक्शे में पहचानो।
अफ्रीका के दक्षिण और पूर्व में ऊंचे पठार हैं। उनकी ऊंचाई .... है।
उत्तर में एक पर्वत है। उसका नाम ..... है।

ऊंचे पठार के बीच फैली लम्बी संकरी घाटियां हैं जिनमें कई बड़ी-बड़ी झीलें भी हैं।

इस घाटी की तीन झीलों को पहचानकर उनके नाम लिखो-

1. *2.* *3.*

मानचित्र 1.

अफ्रीका की प्राकृतिक बनावट

(ऊंचाई, नदियां और झीलें)

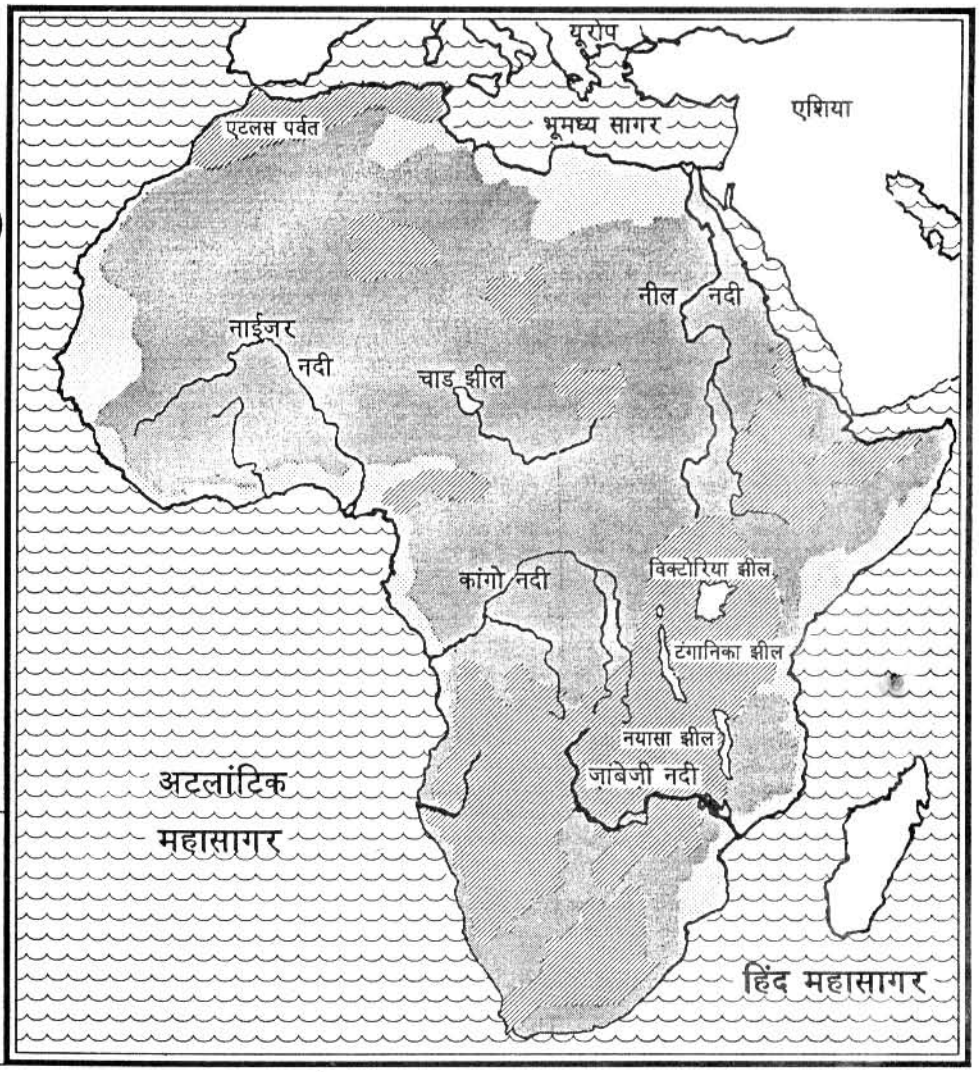

'अफ्रीका राजनैतिक' मानचित्र में अफ्रीका की इन बड़ी नदियों को देखो और बताओ वे किन देशों से होकर बहती हैं और किन समुद्रों में गिरती हैं–

नदी	*देश*	*समुद्र*
1. नील नदी		
2. नाइजर नदी		
3. कांगो नदी		
4. ज़ेम्बज़ी नदी		

इनके अलावा क्या और कोई नदी इस महाद्वीप में है?

उत्तर का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है जहां कोई नदी नहीं दिखती। यह सहारा रेगिस्तान का इलाका है जहां बहुत कम वर्षा होती है। सहारा के इस रेगिस्तान को पार करके बहने वाली केवल एक नदी है।

मानचित्र देखकर बताओ ऊपर की नदियों में से यह कौन सी है?

जहां से यह नदी निकलती है वहां इतना पानी बरसता है कि रेगिस्तान में भी वह बहती हुई भूमध्य सागर में गिरती है। मिस्र देश का अधिकतर भाग रेगिस्तानी है। यहां इसी नदी के किनारे लोग हज़ारों सालों से बसे हैं। इसी नदी से सिंचाई करके खेती करते हैं। (चित्र 3)

अफ्रीका की जलवायु

अफ्रीका को ग्लोब में देखने पर तुम पाओगे कि अफ्रीका के बीच से भूमध्य रेखा जाती है। इस तरह अफ्रीका उत्तरी तथा दक्षिणी दो हिस्सों में बंट जाता है।

दीवार पर टंगे अफ्रीका के मानचित्र में कर्क रेखा को पहचानकर मानचित्र 2 में उसका नाम लिखो। भूमध्य रेखा के दक्षिण में ऐसी ही मकर रेखा बनाई जाती है। मानचित्र में इसे पहचानकर सही जगह पर लिखो।

पृष्ठ 43 पर दिए मानचित्र को देखकर बताओ क्या कोई और महाद्वीप ऐसा है जिसके बीच से भूमध्य रेखा जाती है?

पृथ्वी पर कर्क रेखा से लेकर मकर रेखा तक का प्रदेश गर्म जलवायु का प्रदेश है। यानी कर्क रेखा से मकर रेखा तक के प्रदेश औसतन पृथ्वी के सबसे गर्म प्रदेश हैं। यहां सर्दी न के बराबर होती है।

चित्र 4. रेगिस्तान में बहती नील नदी का एक दृश्य। नदी के किनारे पर ही हरियाली है - आसपास रेत का फैलाव है

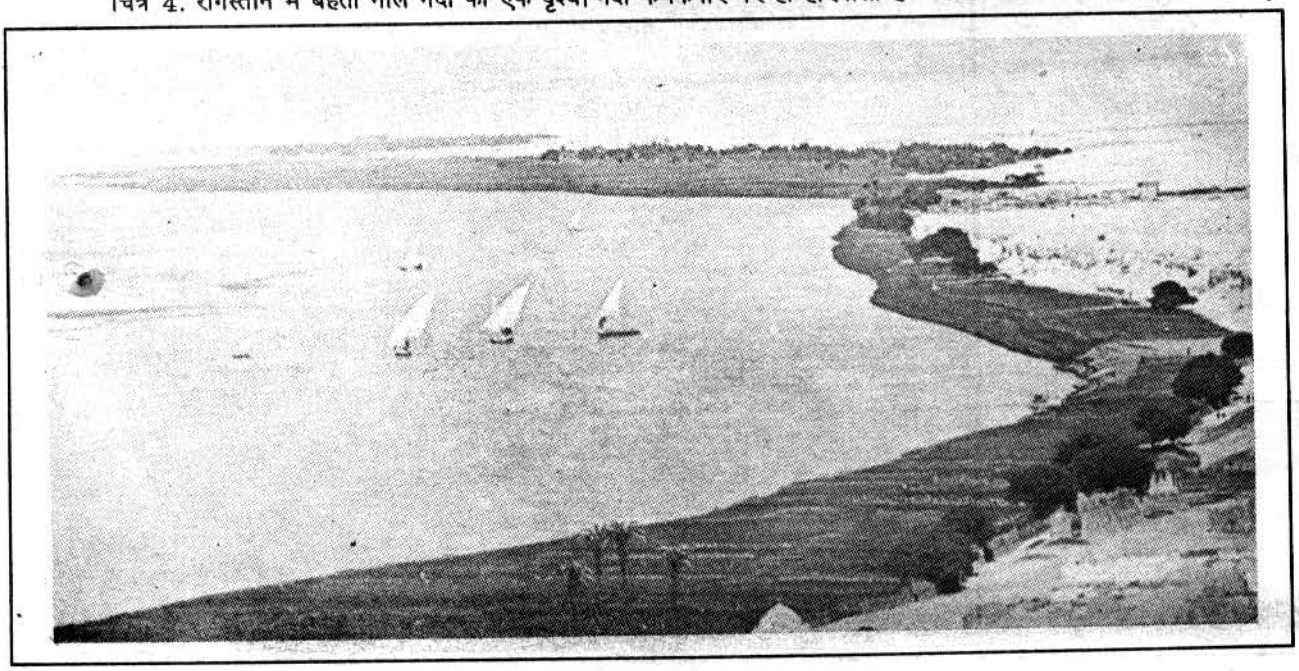

मानचित्र 2

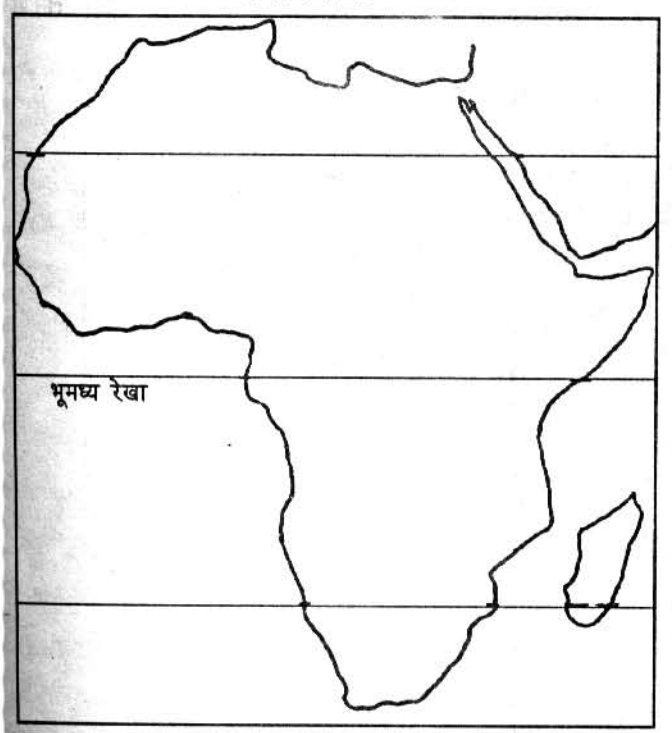

मानचित्र 2 में अफ्रीका में इस पेटी को पहचान कर रंग भरो और उसका नाम लिखो- 'गर्म जलवायु का प्रदेश'।

कर्क रेखा के उत्तर में पड़ने वाले इलाके को और मकर रेखा के दक्षिण में पड़ने वाले इलाके को अलग रंग से रंगो।

इन हिस्सों में सालभर में सर्दी और गर्मी के मौसम दोनों होते हैं। ऐसे प्रदेशों को शीतोष्ण प्रदेश (शीत + उष्ण) कहते हैं।

यह तो हुई गर्मी-सर्दी की बात, लेकिन तुम जानते हो कि गर्मी के साथ जहां खूब वर्षा होती है वहां अलग तरह की जलवायु होती है, और जहां गर्मी तो होती है लेकिन वर्षा कम होती है वहां जलवायु बदल जाती है।

अधिक वर्षा के प्रदेश

अफ्रीका में एक बहुत बड़े इलाके में बहुत अधिक वर्षा होती है। यह इलाका भूमध्य रेखा के दोनों तरफ पड़ता है। मानचित्र 3 में तुम अधिक वर्षा के प्रदेशों को देखो।

अफ्रीका के अन्य भागों में कैसी वर्षा होती है ?

मध्यम और कम वर्षा के प्रदेश

अफ्रीका में जिस इलाके में वर्षा मध्यम होती है उसे वर्षा के मानचित्र 3 में देखो।

मध्यम वर्षा का यह इलाका अधिक वर्षा वाले क्षेत्र के चारों तरफ है। मध्यम वर्षा के इलाके में गर्मी के मौसम में ही वर्षा होती है। जबकि भूमध्य रेखीय अधिक वर्षा वाले इलाके में साल भर वर्षा होती है।

अफ्रीका के मध्यम वर्षा वाले इलाके में अपने देश की तरह वर्षा का मौसम और सूखा मौसम अलग-अलग होता है।

मध्यम वर्षा के कारण यहां मुख्यतः घास होती है, कहीं तो इतनी ऊंची कि हाथी भी छिप जाए। बीच-बीच में पेड़ उगते हैं। इनको सवाना प्रदेश कहते हैं। इनको मानचित्र-4 में देखो। यहां वन्य जानवर भी खूब होते हैं। इनके बारे में तुम आगे पढ़ोगे।

अफ्रीका का एक बहुत बड़ा भाग बहुत सूखा है, यहां वर्षा बहुत कम या कई वर्षों तक नहीं होती।

अफ्रीका के इन कम वर्षा वाले सूखे हिस्सों को नक्शे में देखो।

अफ्रीका का लगभग आधा उत्तरी भाग ऐसा ही सूखा प्रदेश है जिसे सहारा का रेगिस्तान कहते हैं। यहां बीच-बीच में कंटीली झाड़ियां और छोटी घास उगती है। अन्य भागों में दूर-दूर तक बालू है, नंगी पहाड़ियां तथा चट्टानें हैं और कंकड़, पत्थर बिछे हैं। दक्षिण में ऐसा ही एक और सूखा प्रदेश है जिसे कालाहारी का रेगिस्तान कहते हैं।

मानचित्र 2 और 3 की तुलना करो और बताओ-

अधिक वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

मध्यम वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

कम वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

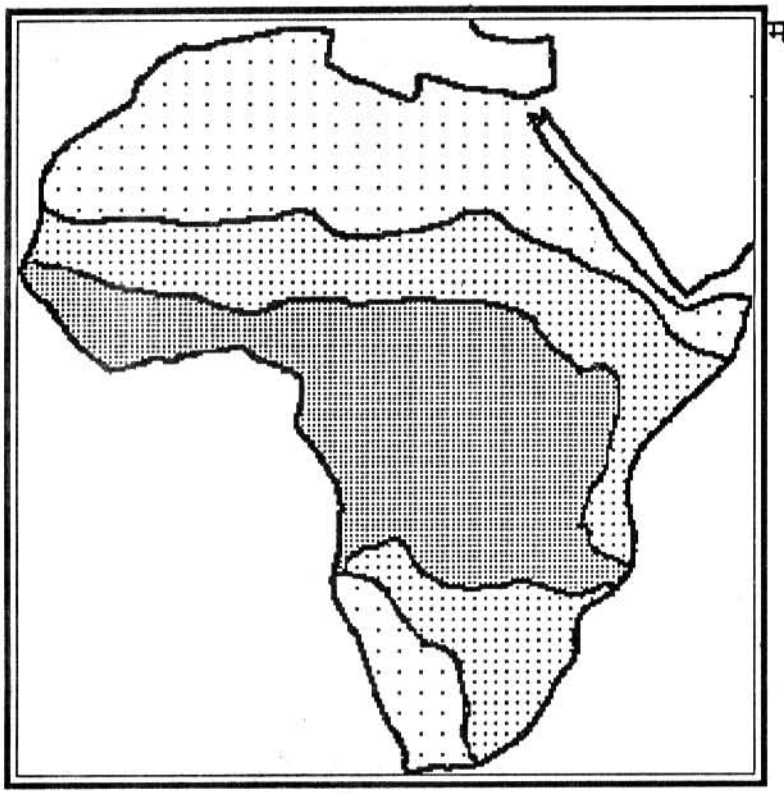

मानचित्र 3. अफ्रीका में वर्षा का वितरण

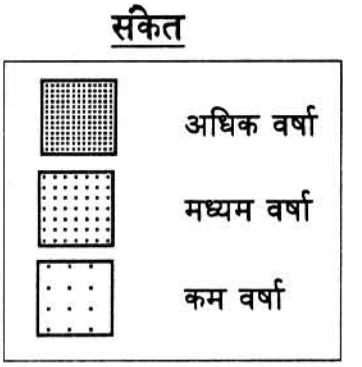

मानचित्र 4. अफ्रीका की प्राकृतिक वनस्पति

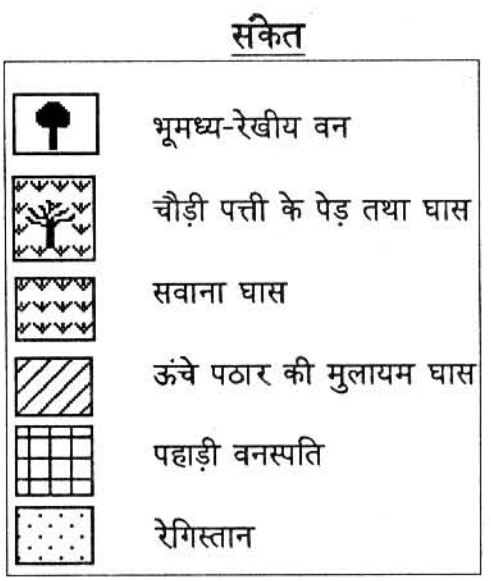

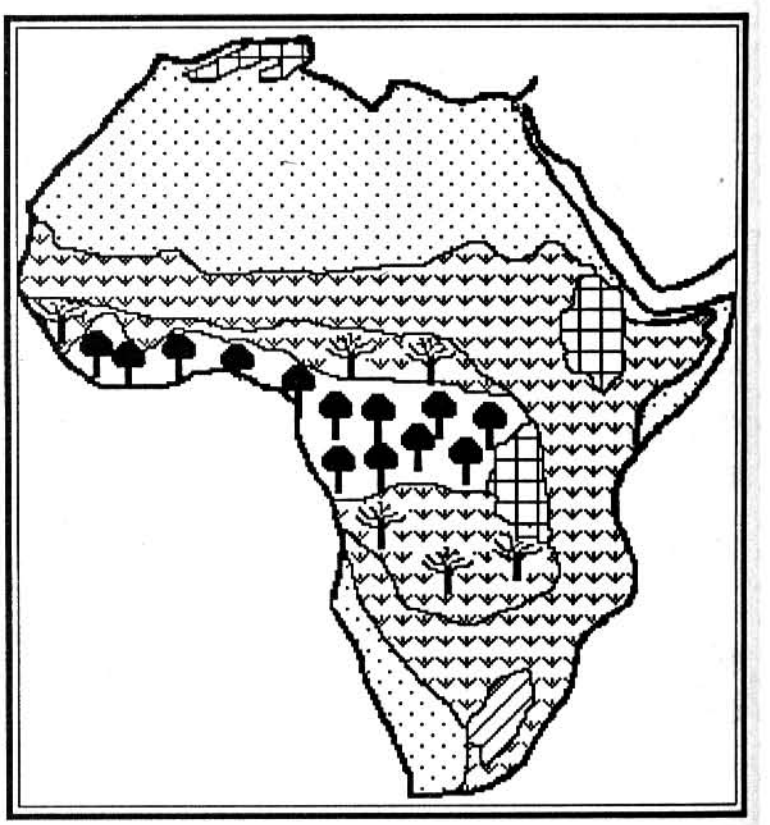

अफ्रीका के अलग-अलग इलाकों के चित्र शुरू में दिये गए हैं। कैसा अलग-अलग नज़ारा है! कहीं घने जंगल हैं, कहीं पेड़ और घास मिले-जुले हैं, कहीं छोटी घास और झाड़ियां और कहीं कोई वनस्पति नहीं है।

तुम इन चित्रों को देखकर क्या बता सकते हो कि कहां कैसी बारिश होती होगी? चित्रों के नीचे लिखो- अधिक, मध्यम और कम वर्षा के प्रदेश। हर चित्र का वर्णन करके बताओ कि वहां के लोगों का जीवन कैसा होगा?

अफ्रीका के लोग

तुमने अफ्रीका के अलग अलग प्रदेशों के बारे में पढ़ा। इन प्रदेशों में कई तरह के लोग रहते हैं, जिनकी भाषाएं अलग-अलग हैं और जिनकी जीवन शैली भी अलग-अलग है। पुराने समय से लोग छोटे-छोटे कबीलों में रहकर शिकार, खेती या पशुपालन करते आए हैं। शिकार करने वाले भूमध्य-रेखीय वनों में या रेगिस्तानों में रहते आए हैं। पशुपालक लोग ऊंचे पठार के सवाना प्रदेशों में अपने पशुओं को चराते रहे हैं। खेती नदियों के किनारे या जंगलों के किनारे होती थी।

अफ्रीका यूरोप तथा एशिया

बहुत समय तक अफ्रीका के बारे में दूसरे महाद्वीपों के लोगों को अधिक जानकारी नहीं थी। अफ्रीका के उत्तर में जो समुद्र है उसके किनारे की जगहों के बारे में ही यूरोप के लोग कुछ जानते थे।

वहां वे कैसे पहुंचते होंगे नक्शा देखकर बताओ।

यूरोप से अफ्रीका पहुंचने के लिए किस दिशा में जाना होगा और कौन सा सागर पार करना होगा?

भूमध्य सागर में बहुत पुराने समय से व्यापारियों का आना-जाना लगा रहता था। वे यूरोप तथा एशिया से आते-जाते थे। उन्होंने आसपास के देशों का मानचित्र बनाया। नीचे उसमें से एक मानचित्र दिया गया है जो पन्द्रहवीं शताब्दी यानी आज से साढ़े पांच सौ साल पहले का है।

इस पुराने मानचित्र में यूरोप क्या वैसा ही बना है जैसा तुम्हारे नक्शे में बना है?

अफ्रीका का आकार तो देखो। अफ्रीका का कौन सा हिस्सा कुछ ठीक दिखता है? अफ्रीका के कौन से हिस्से पुराने नक्शे में बने ही नहीं हैं?

चित्र-4 एक पुराना मानचित्र

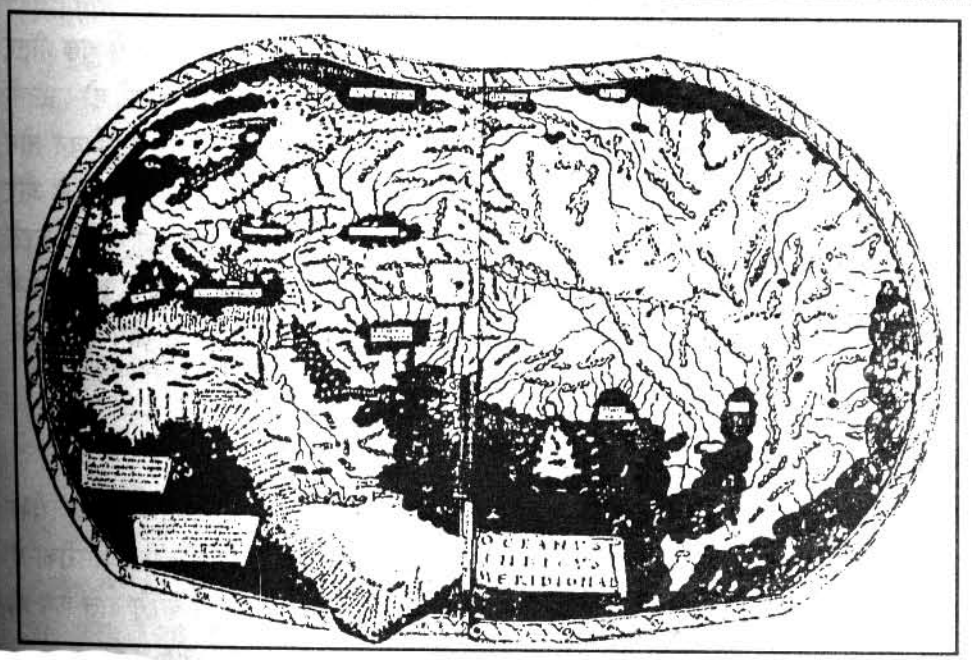

इस पुराने नक्शे को देखकर पता चलता है कि अफ्रीका के उत्तर के वे हिस्से जिनकी जानकारी यूरोपियन लोगों को थी, ठीक से बनाए गए हैं। जैसे अफ्रीका के उत्तरी भागों की जानकारी यूरोप के लोगों को थी। उसी तरह अफ्रीका के पूर्वी किनारे की जानकारी भारत और अरब के व्यापारियों को थी। वे लोग अफ्रीका के

पूर्वी किनारे के बन्दरगाहों, जैसे मोम्बासा, दार-ए-सलाम तथा ज़ंज़ीबार तक आते थे और सोना, हाथी दांत आदि ले जाते थे।

लेकिन इन तटीय प्रदेशों के अलावा अफ्रीका के भीतरी भाग कैसे हैं इनका ज्ञान न यूरोपियन व्यापारियों को था और न अरब या भारतीय व्यापारियों को।

लगभग पांच सौ साल पहले यूरोप के लोग अफ्रीका का चक्कर लगाकर समुद्री मार्ग से भारत पहुंचने का प्रयत्न करने लगे। वे अटलांटिक महासागर से होते हुए सेंट मडियरा तथा एज़ोरस नाम के द्वीपों पर पहुंच कर लंगर डाल देते थे। इन द्वीपों के और दक्षिण में जाने से वे डरते थे क्योंकि वे मानते थे कि दक्षिण में बहुत गर्मी है और उबलता हुआ समुद्र है। फिर सन् 1498 में वास्कोडिगामा नामक एक नाविक कई बन्दरगाहों पर रुकता-रुकाता अफ्रीका का चक्कर लगा कर भारत पहुंच ही गया।

पृष्ठ 43 पर दिए गए मानचित्र को देखकर बताओ-
अफ्रीका से भारत पहुंचने के लिए किस दिशा में जाना होगा?
कौन सा सागर पार करना होगा?
क्या अफ्रीका महाद्वीप एशिया से जुड़ा है?

अफ्रीका का किनारा

यूरोप के बारे में पढ़ते समय तुमने वहां का कटा-फटा किनारा देखा था। वहां के अनेक छोटे-बड़े सागर व खाड़ियों के बारे में पढ़ा था। इनसे यूरोप के लोगों को समुद्री यात्रा करने में क्या मदद मिली, ज़रा याद करो।

अब अफ्रीका के तट को देखो-
क्या यहां भी तुम्हें कटा-फटा किनारा दिखता है या सीधा किनारा दिखता है?
अफ्रीका की कम से कम दो खाड़ियों के नाम मानचित्र 6 में देखकर बताओ।
क्या यहां भी तुम्हें यूरोप की तरह अनेक छोटी बड़ी खाड़ियां दिखती हैं?

अफ्रीका के किनारे पर चार बन्दरगाहों के नाम बताओ जो नदियों के मुहाने या खाड़ी में हैं जहां जहाज़ रुक सकते हैं, भोजन पानी ले सकते हैं?

अफ्रीका के भीतर पहुंचने की रुकावट

तुमने पाया होगा कि यूरोप की तरह अफ्रीका का तट कटा-फटा नहीं है। इसलिये अफ्रीका के तट पर बहुत कम खाड़ियां और बन्दरगाह हैं। यही कारण है कि समुद्री मार्ग से अफ्रीका आने वालों के लिये तट पर रुकने की कठिनाई थी। लेकिन एक बार किनारे उतरने पर भीतर जाना भी आसान नहीं था। अफ्रीका के प्राकृतिक मानचित्र में तुम देख सकते हो कि यह महाद्वीप एक विशाल पठार है। तुम जानते हो कि पठार पर पहुंचने के लिए ऊंचे कगार पर चढ़ना होता है। समुद्री मार्ग से आने वालों के लिए यह एक गंभीर बाधा थी। उस पुराने ज़माने में भीतर जाने के लिए न सड़कें थीं और न रेल मार्ग।

समुद्र के रास्ते आने वाले लोग नदियों से भी भीतर पहुंच सकते थे। लेकिन बड़ी नदियां कगार से उतरते समय झरने बनाती हुई गिरती हैं या संकरी पथरीली घाटी से उतरती हैं। ऐसे प्रपातों या नदियों की पथरीली घाटियों के कारण नावों से भीतरी भागों तक पहुंचना कठिन है।

शुरू में जब यूरोपियन लोग समुद्री तट से कुछ भीतर जाते थे तो वहां के अनेक कबीले बाहरी लोगों को आसानी से अन्दर बढ़ने नहीं देते थे। दरअसल यूरोपियन लोग अफ्रीका में अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे और वहां की संपदाओं और दौलत का फायदा उठाना चाहते थे। वे अफ्रीका के लोगों को दास बनाकर अमेरिका में बेचना चाहते थे। इसलिए अफ्रीका के लोग यूरोपियोन लोगों को आगे बढ़ने से रोकते थे।

दास व्यापार

15 वीं शताब्दी में यूरोप के लोग जा-जाकर अमरीका में बसने लगे थे। वहां उन्होंने खेती फैलाई। अमरीका में ज़मीन बहुत थी, पर खेतों में काम करने वाले कम थे। तब अफ्रीका से दासों का व्यापार शुरू हुआ।

अफ्रीका की गिनी तट के प्रदेशों और पूर्वी किनारे के प्रदेशों से बड़ी संख्या में अफ्रीका के लोगों को बंदी बनाया जाता। उन्हें तटों तक लाकर यूरोपियन व्यापारियों के हाथ बेच दिया जाता। इसके बदले अफ्रीकी कबीलों के सरदार बंदूकें, तांबा, लोहे का सामान, शराब और कपड़ा ले लेते।

दासों के साथ बहुत अत्याचार किया जाता। अनेक लोग तो तटीय बन्दरगाहों तक आते-आते मर जाते। इनको ले जाने वाले जहाज़ भी दासों से बुरी तरह भर दिये जाते। न रहने-खाने की सुविधा, न दवा का प्रबंध। उस समय पाल के जहाज़ चलते थे जिनसे अमेरिका पहुंचने में भी बहुत समय लगता था। यात्रा के दौरान भी बहुत से लोग बीमार होकर या कुपोषण से मरते थे।

अमेरिका में भी इनसे अमानवीय व्यवहार किया जाता। कड़ी मेहनत के बाद भी दासों के रहने खाने का ठीक प्रबंध नहीं होता। इस तरह लाखों अफ्रीकी लोग दास बनाकर दक्षिणी तथा उत्तरी अमेरिका और पास के द्वीपों तक लाए गए और लाखों लोग दास बनने के बाद मर गए। 16 वीं तथा 17वीं शताब्दी में अनेक कंपनियां इस तरह दास व्यापार करती रहीं। 19वीं शताब्दी में दास व्यापार बंद हुआ तथा 1860 में अमेरिका में लाए दास भी वहां के स्वतंत्र नागरिक हो गए।

यूरोपियन लोगों ने राज्य बनाए

तुमने पिछले पृष्ठों में पढ़ा कि यूरोपियन लोगों ने अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत जाने का मार्ग खोज लिया था। फिर उसी मार्ग पर पड़ने वाले अफ्रीकी बन्दरगाहों पर भी उतरने लगे थे। धीरे-धीरे स्पेन, पुर्तगाल, डच, अंग्रेज़, फ्रेंच और जर्मन लोगों ने अफ्रीका के भीतरी भागों में अपने पैर जमाए और वहां अपने राज्य बना लिये। पिछली शताब्दी के अंत का अफ्रीका का राजनैतिक मानचित्र दिया गया है। इसमें यूरोपियन देशों के राज्य दिखाए गए हैं।

क्या तुम उन देशों को यूरोप में ढूंढ सकते हो जिन्होंने अफ्रीका में अपने राज्य बनाए?

बताओ अफ्रीका के सूडान और ज़ैरे देशों में कौन से यूरोपियन लोगों का राज्य था?

अफ्रीका के ऐसे कुछ क्षेत्रों पर उंगली फेर कर बताओ जिनमें यूरोपियन देशों के राज्य नहीं थे। वे आज कौन से देश हैं?

मानचित्र 5 अफ्रीका में यूरोपियन देशों के राज्य -1900

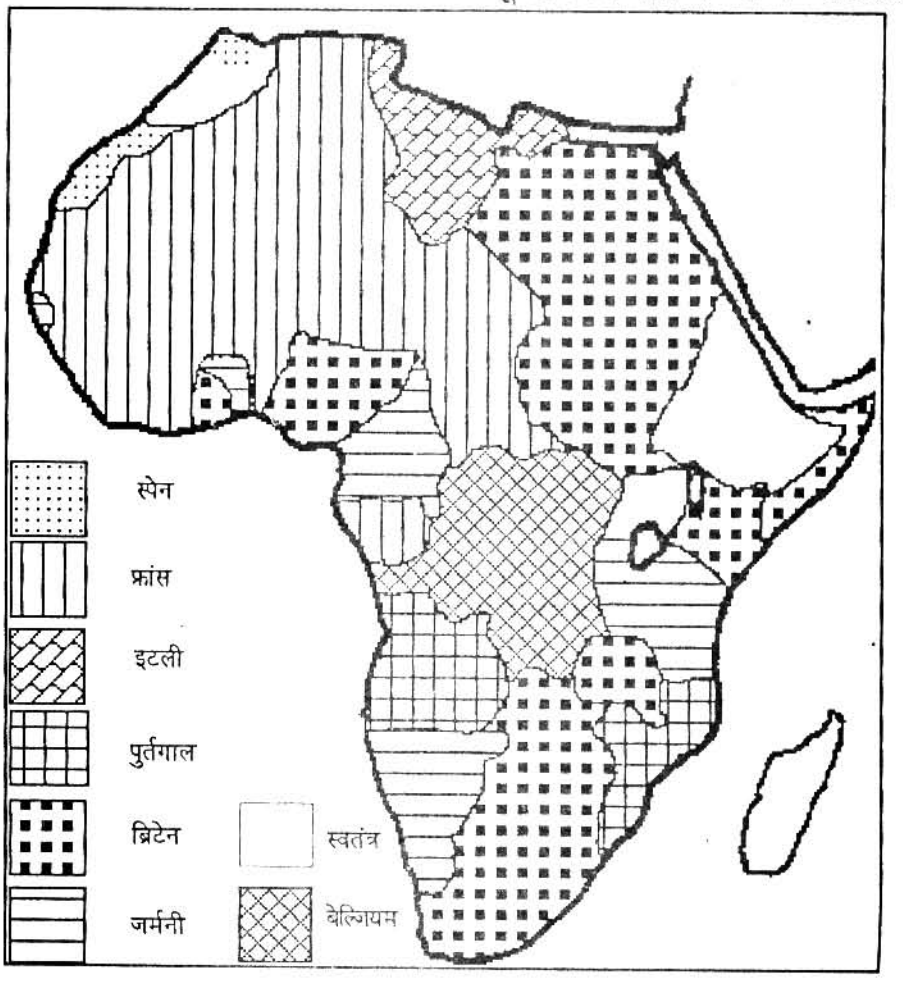

ऊंगली फेर कर बताओ किन यूरोपियन देशों के राज्य अफ्रीका में कहां पर हैं?

अपने राज्य बनाने के साथ-साथ यूरोपीय लोग अफ्रीका के भीतरी भागों की खोजबीन करते रहे। वे उत्तर में नील नदी के उद्गम तक पहुंचे। पश्चिम में नाईजर नदी के सहारे उसकी घाटी का पता किया और दक्षिण में केपटाउन से उत्तर की ओर बढ़े। वहां ज़ेम्बज़ी नदी और उसके चारों ओर के प्रदेश का भी ज्ञान प्राप्त किया।

यूरोपीय लोग अफ्रीका में अपने राज्य बनाकर वहां की लकड़ी, खनिज आदि का बड़े पैमाने पर यूरोप को निर्यात करने लगे। दक्षिणी अफ्रीका की सोने और हीरे की खानें तो अभी भी यूरोपीय कम्पनियों के हाथ में हैं। ज़ाम्बिया और ज़िम्बाबवे में तांबे की बहुमूल्य खदाने हैं। यहां का तांबा तथा अन्य खनिज भी बाहर भेजे जाते रहे।

यूरोपियनों ने सिर्फ अफ्रीका से चीज़ें बाहर नहीं भेजीं। उन्होंने अफ्रीका में खेतिहर प्रदेश विकसित करके चाय, काफी, कोको, रबर, तम्बाकू आदि भी पैदा करनी शुरू की। पैदा करने के बाद इन चीज़ों को भी यूरोप भेजा जाता रहा।

स्वतंत्र अफ्रीका

वर्तमान शताब्दी में धीरे-धीरे यूरोपियन लोगों से अफ्रीकी देश स्वतंत्र हुये। अफ्रीका में नये-नये देश बने जहां उसी प्रदेश के लोगों ने अपनी सरकार बनाई। अफ्रीकी देशों में अब भी बहुत से यूरोपियन लोग बसे हैं लेकिन उन देशों की संपत्ति, जैसे खनिज, वन उपज, खेती की उपज का लाभ अब धीरे-धीरे अफ्रीका के लोगों को मिलने लगा है।

अफ्रीका के मानचित्र 7 में विभिन्न देशों को अलग-अलग रंगों से रंग कर उनके नाम लिखो तो तुम स्वतंत्र अफ्रीका के देशों से परिचित हो जाओगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. यूरोप से उत्तरी अफ्रीका आने के लिए कौन-सा सागर पार करना होता है?
2. पुराने समय में अफ्रीका के भीतर जाने में मिलने वाली तीन रुकावटों को बताओ।
3. अफ्रीका में दो बड़े रेगिस्तान हैं उनके नाम बताओ।
4. अ-कर्क और मकर रेखा के बीच का प्रदेश ..... जलवायु का प्रदेश है।
   ब- सवाना प्रदेश की मुख्य वनस्पति ..... है।
   स- अफ्रीका में अटलांटिक महासागर में गिरने वाली दो मुख्य नदियां ..... हैं।
   द- कर्क रेखा के उत्तर तथा मकर रेखा के दक्षिण में अफ्रीका के ..... जलवायु के प्रदेश हैं।
5. पाठ में दो राजनैतिक मानचित्र दिए गए हैं। दोनों की तुलना करके बताओ वर्तमान नाइजीरिया तथा ज़िम्बाबवे किस यूरोपियन राज्य के हिस्से थे?
6. अफ्रीका के उन दो देशों के नाम बताओ जहां भूमध्य रेखीय वन पाए जाते हैं?
7. यूरोप के लोग अफ्रीका की किन चीज़ों का व्यापार करते थे? यूरोपियन लोगों ने अफ्रीका में कौन सी फसलें व्यापार के लिये पैदा करनी शुरू कीं?
8. दास व्यापार में किसको लाभ होता था? अमेरिका में दासों की आवश्यकता क्यों थी?

मानचित्र 6 अफ्रीका के देश